नाकार मानते हैं?

4.4 कलाकारों का नाम लुंगा। इन सबकी अपनी एक निजी दृष्टि रही है। सुब्रमणियम, भूपेंद्र खक्कर, तैयब मेहता और मंजीत बाबा जैसे इन्होंने संसार को अपनी व्यक्तिगत दृष्टि से देखा और उसे उसी रूप में चित्रित किया है। उन्हीं चित्रकारों को मैं चित्रकार कह सकता हूं। में मुझसे नाम गिनवाने को कहें तो में अमृता शेरगिल, कलाकार वहीं अच्छा है, जिसकी अपनी निजी दृष्टि होती है। जो अपनी आंखों से संसार को देख सके, महसूस कर सके, वास्तव में वही कलाकार होता है। अगर आप इस संबंध क्या यूरोप में भी कोई आर्ट युद्ध की स्थिति है?

इनका प्रभाव बड़ा सीमित है। समीक्षक, गैलरी वाले और म्यूजियम नहीं, यूरोप के ज्यादातर देश स्वतंत्र खयालों वाले हैं, जहां हर प्रकार के प्रयोग की स्वतंत्रता है। हां, कुछ बौद्धिक तानाशाही जरूर है, लेकिन प्रबंधन मिलकर कभी-कभी एक गुट बना लेते हैं और अपनी विचारधारा को सही सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। बहरहाल ये सब तो होता ही रहता है। वैसे अगर हम अपने देश

प्रयोगधर्मिता है, जिससे हम काफी कुछ सीख में इस तरह की गुटबाजी न लाएं तो ज्यादा अच्छा होगा। कला में गुटबाजी अक्सर खतरनाक होती है। यूरोप में कला के क्षेत्र में अच्छी खासी सकते हैं।

भविष्य से पहले में वर्तमान पर नजर डालना चाहुंगा। लेकिन हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि बिना अगर हम अपनी अभिव्यक्ति को संपूर्णता में हासिल कर सके तो भविष्य अपने आप सुंदर हो जाएगा। कभी-कभी चित्रकारों में एक तरह का आत्मसंतोष घर कर लेता है क्योंकि भारत में इस क्षेत्र में वैसी प्रतिस्पर्धा नहीं है जैसी विदेशों में है, उच्चकोटि का काम किए कोई सफल नहीं हो एब्सट्रेक्ट आर्ट का भविष्य आप कैसा देखते हैं?

क्या आप समझते हैं कि भारतीय कला के कद्रदानों में केवल अनिवासी भारतीय ही हैं या इसने भारत में भी मुख्यधारा में जगह बनाई है?

भारतीय कला का इतिहास बड़ा ही गौरवशाली रहा है।

लेने के इच्छक पर्यटक रेल् मार्ग के दृष्टि कं गुलेकान मे वर्षों से पेरिस में रह रहे भारतीय चित्रकार

खटोले की गति पृथ्वी की तरह हैं। अपने अक्ष पर चक्कर तमाम दूसरी चीजें एक ही उड़ान में दिख जाती हैं। उड़न गति से ऊपर उठता रहता है। गैंडोला पर यात्रा का मजा उड़नखरोला 360 डिग्री के कोण पर घूमते हुए निश्चित काटते हुए यह ऊपर उठता है। इस तरह अपनी यात्रा में 北京和 पूरी होती है। प्रथम चरण यात्रा तीन चरणों में पूरी ह शुरू होती है। एंजलबर्ग रे पहुंचते हैं। एंजलबर्ग से तीनों चरणों की यात्र

टिटलिस के निचले

ब्लेंक फॉरेस्ट बाले इलाकों, झीलों और टिटलिस और उसकी घटियों, वहां के



सबसे ऊंची चोटी तक पहुंचाते हैं।

खरी-खरी

मथुरा, मदुरई के प्रसिद्ध धरोहरों से प्रेरणा ली है। इसी तरह समकालीन यूरोपीय

सैयद हैदर रज़ा

पश्चिम के कला-प्रेमियों ने आपकी कला ने भी हमें प्रेरित किया है।

कला के दर्शन को समझा है? मैं करीब 15 सालों तक विदेशों में रहा। इस दौरान मुझे समूचे यूरोप संतुष्ट नहीं था। मुझे लग रहा था जैसे कोई जरूरी चीज छूट रही है। सहसा मुझे लगा कि बिना अपनी जन्मभूमि में सफल हुए, मेरी राज, संसार आदि पर काम किया। में समझता हूं कि मेरे साथ-साथ तमाम दूसरे भारतीय चित्रकारों को देशी विषय-वस्तुओं की समझ खासतौर पर फ्रांस में जबर्दस्त सफलता मिली। इसके बावजूद मैं एकांगी है। मेरे हृदय की अंतर्यात्रा मुझे यहां खींच लाई। यहां मैंने चित्रकला के विभिन्न विषय-वस्तुओं- बिंदु सफलता अधूरी है, होनी चाहिए।

भारतीय कलाकारों को कब अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्वीकृति मिली?



24 रंगीन पृष्ठ भारकर के पाठकों के लिए मूल्य सिर्फ 1 रू.





सोमवार 3 मार्च (पाक्षक)

♦ फैशन डिज़ाइनर बने

• भाषा विज्ञान में सभावनाएं अनना है

साथ ही...